"अनबीता व्यतीत उपन्यास में पर्यावरण चित्रण"

1. श्रीमती प्राजक्ता राजेंद्र प्रधान
शोध - छात्र
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर
prajaktapradhan1986@gmail.com
२. डॉ. अशोक मोहन मरळे
मालती वसंतदादा पाटील
कन्या महाविद्यालय, इस्लामपुर

सारांश :

आज का युग विज्ञान का युग हैं। मनुष्य के सामने हर रोज एक नई चुनौती रही हैं। अतःआज मनुष्य के सामने सबसे बड़ी चुनौती पर्यावरण और आधुनिकीकरण के बीच सामजस्य बैठाना हैं। जंगलो की कटाई, पशु पक्षियों की हत्या, बढ़ता दहशदवाद आदि कारणों की वजह से पर्यावरण को कुचल कर हम तेजी से आर्थिक विकास की ओर बढ़ रहे हैं, परंतु पृथ्वी की इस जीवनचक्र को सुरक्षित रखने के लिये पर्यावरण को संतुलित और सुरक्षित रखना उतना ही जरूरी हैं। इसलिए आज सरकार ने भी पर्यावरण के इस संतुलन को आबाद रखने के लिए प्रभावी कदम उठाये हैं। पर्यावरण की सुरक्षितता को ध्यान में रखने के लिए तथा प्रकृति को आबाद रखने लिए अनेक साहित्यकारों ने अपनी कलम उठाई हैं। हिंदी के साहित्यकारों ने भी यहाँ अपना योगदान प्रस्तुत किया हैं। साहित्यिक कृतियों के माध्यम से रचनाकारों ने वस्तुस्थिती प्रस्तुत करने और सुधार के लिए जागरुकता फैलाने का काम किया हैं। जहाँ हिंदी साहित्य में आदिकाल से लेकर रीतिकाल तक किसी न किसी रूप में काव्य में प्रकृति और पर्यावरण का सुंदर चित्रण किया हैं, फिर आगे चलकर छायावादी कवियों ने पर्यावरण की बढ़ती समस्या को ध्यान में रखा हैं, वहीं आधुनिकाल में पर्यावरण चिंतन को केंद्र में रखकर कई उपन्यासों का सृजन किया और पर्यावरण जागरुकता से संबंधित आधुनिक प्रश्नों को प्रमुखता से उठाया हैं।'कमलेश्वर ' जी का 'अनबीता व्यतीत' उपन्यास पर्यावरण की समस्या को केंद्र मे रखते हुए इसका निर्माण किया हैं।पर्यावरण से जुडे पशु-पक्षी भी कितने आवश्यक हैं इस प्रकृति में पक्षियों होना बहुत महत्वपुर्ण हैं अत: प्रकृति की यह एक धरोवर हैं यह प्रस्तुत करने का काम कमलेश्वर जी ने "अनबीता व्यतीत"उपन्यास में किया हैं।अब हमारा कर्तव्य हैं कि पर्यावरण को स्वस्थ बनाने हेतु हम भी सक्षम रहे।

बीज शब्द : पर्यावरण, प्रकृति, धरोवर, पर्यावरण प्रदूषण

प्रस्तावना :

प्रकृति का प्रत्येक अवयव चाहे वह जैविक हो अथवा अजैविक, उसका अपना एक पर्यावरण होता हैं। पर्यावरण,शब्द 'परि' और 'आवरण" दो शब्दों से मिलकर बना हैं। परि का अर्थ हैं 'चारों ओर' तथा आवरण का अर्थ हैं 'ढका हुआ' या घेरा।इस प्रकार पर्यावरण का शाब्दिक अर्थ हुआ चारों ओर घेरा या कवच' अंग्रेजी में पर्यावरण के लिए Environment शब्द का प्रयोग किया जाता हैं जिसका अर्थ हैं आस पास का वातावरण। विश्व हिंदी शब्दकोश के अनुसार, "पर्यावरण एक ऐसा विषय हैं जिसमें जीव-जनुओं, पेड-पौधों, जलवायु तथा मानव समुदायों को उनके अपने वातावरण के साथ जोड़कर देखा या समझा जा सकता हैं।[1]'' पर्यावरण और मनुष्य में इतना गहरा संबंध हैं कि वह एक दूसरे को प्रभावित किये बिना नही रह सकते। अतःपर्यावरण की इन समस्याओं को लेकर साहित्य भी अछूता नहीं रह सकता। प्रारंभिक दौर में जहाँ हिंदी कविता प्रकृति की सौदर्य का बखान कर रही थी। प्रकृति के सौदर्य में जीवन का सौदर्य ढूढंने का प्रयास कर रही थी परंतु बढते ओद्योगिकरण, जनसंख्या दबाव और संशोधनो की पुर्ती के लिए होने वाले खनन ने जंगलों को काटना शुरू कर दिया,पशु- पंछियों की हत्या की गई,हिंसा और आतंक ने पर्यावरण को बरबाद कर दिया हैं। कमलेश्वर लिखित 'अनबीता व्यतीत' पर्यावरण के होनेवाले हिंसक परिणामों को उजागर करने का प्रयास करता हैं।पर्यावरण दृष्टिकोण यह हिंदी उपन्यास यात्रा का एक पड़ाव हैं कमलेश्वर का अनबीता व्यतीत नामक उपन्यास पर्यावरण प्रदूषण तथा मनुष्य और अन्य जीव जंतुओं के बीच के परिणामों को प्रदर्शित करता है।

महाराजा सुरेन्द्रसिंह स्वतंत्र भारत में राजशाही का अवशेष हैं। इनका आन बान शान सब गुम हो गया हैं।अपनी चिंता और दूख से मुक्त होने के लिए वह मासूम पंशु-पक्षियों की शिकार करने लगे।पशुओं हत्या की मार्मिकता के साथ उपन्यास की कथा प्रारंभ होती हैं।सचमुच बहुत भयानक दृश्य था वह "विशाल दीवानखाने के संगमर्मर के सफेद फरी दूर-दूर तक खून फैला हुआ था। महल जोहड में कई आकार प्रकार के छोटे बड़े पक्षियों के मृत शरीर पड़े थे। एक कोने में एक बड़ी-सी मादा हिरणी की रक्त रंजित लाश पड़ी थी। उसका मुँह दीवान खाने की छत की ओर उठा हुआ था। उसकी बेजान आँखें शून्य से टिकी हुई थी। उन आँखों की

पथरीली पुतलियों पर उदास इन्तजार झलक रहा था।"[2] महारानी राजलक्ष्मी ने दो आफ्रीकी काकातुओं को पाल रखा था। एक दिन महाराज ने गोली मारकर उन पक्षियों की हत्या कर दी। 'दीवानखाने के साफ संगमरमरी फर्श पर ककातुओं के फड़फड़ाते जख्मी पंखों से खून की बूँदे छिटक-छिटक कर गिर रही थी। दीवारों पर भी यहाँ वहां खून के छीटे पड़े गए थे। काकातुओं की दर्द भरी चीखे और बेचैन पंखो मनहूस फडफडाहट की आवाज़ दीवानखाने में भरी हुई थी। कांच के बेजान झूमर के लिए आपने निर्दोष पक्षियों के प्राण छीन लेते है।पशुओं की हत्या के कारण महारानी इतनी दू:खी हो जाती लेकिन इसके बाद भी महाराज शिकार कर कई हिरन, बाघ और अन्य जानवरों की शिकार करते थे।

औद्योगीकरण के कारण मनुष्य ने प्रकृति में जो उनके जैव संपत्ति हैं उनके भी व्यवसाय करने शुरू कर दिए है।व्यावसायिक एवं स्वार्थ मानसिकता वाले आधुनिक मानव अपनी सुख-सुविधा की सामग्री जुटाने के प्रयास में प्रकृति नियमों से बेखबर रहकर सीमित विभावो का अनियंत्रित एवं बेतहाशा दोहन कार्य करते रहते हैं।पश्चिमी संस्कृति में सब पशुओं को सिर्फ वस्तुओं के रूप में देखते है। आसमान में उड़नेवाले मासूम पछियों जंगल में चरने वाले जानवरों, जल में तैरनेवाले मछलियों को अपने स्वार्थ पूर्ति के लिए मार डालते है। मनुष्य अपनी स्वार्थ में इतना अंधा हो गया है की,उसके होनेवाले विपरीत परिणामों को वह समज नही रहा है।

नरेंद्र सिंह महाराज पक्षियों को निर्यात करने के लिए प्रेरित करते हैं। पक्षियों के निर्यात को वह अपना कारोबार बनाना चाहते है।वह यह समजते है की पक्षियों की निर्यात करना कोई गैर कानूनी काम नही है,इसलिए नरेंद्र महाराज से कहा जाता है "महाराज इस बार आप भी अच्छी तरह जानते हैं कि विदेशों के चिड़ियाघरों में पशु पक्षियों की कितनी जबरदस्त डिमांड हैं और हमारे देश में इनकी कोई कमी नहीं। इनका कोई मालिक तो नहीं हैं, जो इनके पकड़े जाने पर एतराज करें। इनकी सप्लाई करके हम थोड़ी सी पूँजी से ही बड़ी दौलत कमा सकता हैं।[3]'' महाराज सुरेन्द्र सिंह यह अच्छी तरह जानते थे कि राजपाट चले जाने के बाद कुछ राज घरानों के महत्वाकांक्षी युवराजो कुंवर साहबों ने जिन्दा मुर्दा पशु पक्षियों के व्यापार का यह नया धंधा खोज निकाला था। उन्हें मालूम था कि इस धंधे के वैध लायसन्सों के पीछे अवैध कारोबार का बहुत बड़ा संजाल पनप चुका हैं, पर वे चाहते हुए भी उसमें दखल दे सकें, इस स्थिति में वे खुद को नहीं पाते थे जयसिंह कहते हैं। हमारे देश में ही इन कामों पर उंगली उठाई जाती हैं। विदेशों में तो इसे सिर्फ एक व्यवसाय माना जाता हैं और व्यवसाय कोई भी हो, इससे नफरत नहीं की जाती। इस बात से पता चलता हैं कि जयसिंह के पक्षी प्रेम सिर्फ रुपया कमाने की एक बहाना मात्र थी। समीरा का परिवार के लोग पशु-पक्षियों के व्यवसाय से जुड़े हुए हैं। इसलिये पक्षियों के साथ क्रूरता का व्यवहार उनकी विवशता हैं। लेकिन पक्षी-प्रेम के कारण समीरा को कई बार अपने परिवार के नाना महाराज सुरेन्द्र सिंह, पिता नरेंद्र सिंह पति जय सिंह आदि से संघर्ष करना पड़ा था। एक हालनुमा कमरे में फर्श से दस-बारह फुट की ऊंचाई तक लोहे की जालिया वाले पिंजरों में तरह तरह की चिड़ियाँ बंद थी।उन पक्षियों की छटपडाहट देख समीरा ने उन सभी पिजरो को खोल दी और सभी पक्षियों को आजाद कर देती है। समीरा के इस व्यवहार से नरेंद्र सिंह काफी गूस्सा हो गए। उसने पक्षियों के निर्यात का कड़ा विरोध किया और अपने पिता को फटकारा इस घटना को लेकर दोनों में मतभेद बढ़ गया। उन्होंने कहा कि समीरा उनके लाखों रुपये मिटटी में मिला दिए पहली मुलाक़ात के अवसर पर ही कुंवर जय सिंह ने पक्षियों के बारे में समीरा को अनेक नयी-नयी बातें बताई थी,जिससे समीरा बहुत ही प्रभावित हो गयी थी।लेकिन शादी के बाद रतनपुर पहुँचने पर क्रमश: उसे पता चला कि उसका पति भी पिता की तरह पक्षियों की निर्यात करता हैं।

समीरा पति का विरोध करती हैं लेकिन उसका पति वह अपने व्यापार छोड़ने से मना कर देता हैं। एक दिन समीरा ने जय सिंह से साफ-साफ कह दिया। "मैं जानती हूं पंछियों के करोड़ों रुपये का बिज़नेस को छोड़ने या बंद कारण आप के लिये मुमकिन नहीं होगा ।लेकिन मेरे लिए यह मुमकिन होगा कि मैं मुर्दा की इस दुनिया से बाहर चली जाऊ ।वह अंत में एक निर्णय लेकर कहती हैं । अगर आप चाहते हैं कि मैं यहाँ रहू, जिंदगी भर आपके पास और साथ रहूँ तो यह टेनरी का धंधा बंद करना पड़ेगा आपको।[4]"जयसिंह अपने कारोबार को छोड़ने से मना कर देता हैं। अंततः उसका विरोध भावना इतना बढ़ गया हैं कि दोनों अलग रह गए जब समीरा मायके आती हैं तब घरवालों से जय सिंह बात करते हैं उसका सभी समर्थन करते हैं। समीरा को आदेश देते हैं कि नीली झील के पास कभी नहीं जाए।वह जय सिंह द्वारा नियुक्त बहेलियों के जाल में फंसने से पक्षियों को रोकने का कार्य करती हैं और अपने पति से इस निर्मम व्यवसाय को छोड़ने का आग्रह करती हैं। उसका विरोध इतना तीव्र हो जाता हैं कि दोंनो अलग – अलग रास्ते पार चल पडते हैं और अंत मे प्रकृति एव पशु- पक्षियों के प्रेमी गौतम को बचाने के प्रयास मे समीरा को आपनी पति के गोली का शिकार होना पडता हैं।

प्रेमचंद चंदोला का कथन हैं- "प्रकृति का हर जीव पेड़ पौधे, प्राणी, पक्षी आदि सभी प्रकृति के महत्वपूर्ण अंग पुर्जे हैं, जो इस गृह पर जीवन के प्राकृतिक तंत्र का संचालन और निर्धारण करते हैं। किसी भी कारण पौधे या प्राणी की किसी भी जाती को यदि गड़बड़ी पहुँचती हैं तो इसके परिणाम सृष्टि के सारे क्रियाकलापों में महसूस किये जाते हैं। इस प्रकार प्रकृति के संतुलन में वन्य

प्राणियों, पशु-पक्षियों आदि का भी उतना ही महत्व हैं, जितना मनुष्य का।"[6] अनबीता व्यतीत पर्यावरण की समस्या को केंद्र में रखकर मानवीय करुणा, दया के रागात्मक प्रसार का अंकन करनेवाला अनुठा उपन्यास हैं। प्रकृति में तरह तरह के जीव हैं इनमें से सबसे मासूम और सुंदर वे पछी जो हमारे वन्य संस्कृति की संपदा भी हैं- वे परदेशी पंछी जो सदियों से सर्दियों में सायबेरिया और उत्तरी गोलार्ध से उड़कर हर वर्ष भारत में आकर बसेरा करते हैं। लेकिन इन मासूम पक्षियों के पीछे भी मृत्यु पडी रहती हैं। जगह जगह इन्हें पकड़ा या मारा जाता हैं, और इनका व्यापार किया जाता हैं। जो पशु पक्षियों को मारकर धन कमाने में संलग्न हैं उनके विरुद्ध जनमानस को उतेजित करने का काम इस उपन्यास के द्वारा संपन्न होता हैं। इस उपन्यास के पात्र अपने सुख दुख के लिए संघर्ष नहीं करते, बल्कि पक्षियों की मुक्ति तथा उनके प्राकृतिक अधिकार के लिए संघर्ष करते हैं।

निष्कर्ष :

करुणा, दया और सहअस्तित्व पर आधारित भारतीय आदर्श पर्यावरण सुरक्षा के लिए आवश्यक हैं। व्यवसायिक एवं स्वार्थ मानसिकता वाले आधुनिक मानव अपनी सुख सुविधा की सामग्री जुटाने के प्रयास में प्रकृति नियमों से बेखबर रहकर सीमित विभवों का अनियंत्रित एवं बेतहाशा कार्य करते रहते हैं।मृत पड़े पक्षियों के खून के छीटे तथा हिरणी का लाश को देखकर महारानी का इतनी पदुखी होती हैं कि वह भगवान् को पुकार लगाती हैं। समीरा को भी गोली का शिकार बनना पड़ता हैं। वहाँ गौतम अपनी माँ की अंतिम इच्छा को पूरी करने में सफल नहीं होता ,क्योंकि उसने मानव की अपेक्षा जीव जंतुओं के जान को महत्वपूर्ण माना। अपने घर संपत्ति सब को बेचकर उसने नीली झील को खरीदा और पंछीयों की धर्म शाळा बनाई और एक बोर्ड लिखा की,यहाँ शिकार करना मना हैं। इस सुन्दर दुनिया में मानव मात्र नहीं सब जीव जंतुओं को भी स्थान हैं इस तत्व को अत्याधिक मार्मिकता के साथ यहाँ कमलेश्वर जी व्यक्त करते हैं।

संदर्भ ग्रंथ :

1. फादर बुल्के कामिल, अंग्रजी हिंदी कोश,पृ क्र 214
2. कमलेश्वर, अनबीता व्यतीत,लोकभारती प्रकाशन,प्रथम संस्करण 2005, पृ.क्र.8
3. वही,पृ क्र. 12
4. वही,पृ.क्र.55
5. वही, पृ .क्र.108
6. चंदोला प्रेमनंद ,पर्यावरण और जीव, हिमाचल प्रकाशन ,1989